Gyanvividha, Vol.-1; Issue-5 (October-December) 2024 : PP-41-46

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
Vol.-1; Issue-5 (Oct.-Dec.) 2024
Page No.- 41-46
©2024 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

सीताराम गुप्ता

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,
दिल्ली – 110034.

उर्दू अल्फ़ाज़ और नुक़्ते का प्रयोग

समाचार पत्रों की भाषा आजकल अखरने लगी है, क्योंकि वर्तनी और वाक्य-विन्यास दोनों स्तरों पर प्रायः अनेक विसंगतिया देखने को मिलती हैं। उर्दू में प्रयुक्त अरबी-फ़ारसी के शब्दों के उच्चारण और हिंदी में उनके सही लेखन को लेकर तो अनेक भ्रांतियाँ चली ही आ रही हैं। हम उर्दू के अनेक शब्दों में कई वर्णों पर या तो नुक़्ता नहीं लगाते, या फिर जहाँ नुक़्ता नहीं लगाया जाता, वहाँ भी नुक़्ता लगा देते हैं, जो अत्यंत हास्यास्पद हो जाता है। नभाटा के दिनांक 12:09:2024 में एक आलेख का शीर्षक है "क्या मिसाल बनेगी iPhone की कामयाबी"। इस शीर्षक में कामयाबी शब्द में क पर नुक़्ता लगाया गया है, जो कि उचित नहीं। साथ ही आलेख में आए अन्य उर्दू शब्दों ताक़त, मुताबिक़, मौक़ा आदि शब्दों में क पर नुक़्ता नहीं लगाया गया, जबकि इन शब्दों में क पर नुक़्ता लगाया जाना चाहिए।

हिंदी में उर्दू के माध्यम से आए अरबी-फ़ारसी अल्फ़ाज़ बेहद कसीर तादाद में हैं। कुछ शख़्स हिंदी में प्रयुक्त उर्दू अल्फ़ाज़ (अरबी-फ़ारसी शब्दों) को लिखते समय जहाँ अपेक्षित हो देवनागरी लिपि के वर्णों क, ख, ग, ज और फ के नीचे नुक़्ता लगाकर क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ लिखने की सिफ़ारिश करते हैं तो कुछ इसकी पुरज़ोर मुख़ालफ़त करते हैं। एक समय था जब इस समस्या को लेकर हिंदी वाले दो गुटों में बँट गए थे। आज की स्थिति तो और भी भयावह है। कुछ विद्वान इन पाँच वर्णों में से कुछ वर्णों पर तो नुक़्ता लगाने को सही मानते हैं लेकिन आगत सभी वर्णों पर नहीं। साथ ही कुछ

हज़रात अरबी-फ़ारसी के कुछ शब्दों में तो इन वर्णों पर नुक़्ता लगाने को उचित मानते हैं लेकिन हर शब्द में अपेक्षित वर्ण पर नहीं। ये कैसे संभव है? ये ऐसी समस्या है जिस पर एकमत नहीं हुआ जा सकता लेकिन किसी भी भाषा में उच्चारण के महत्त्व को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता और किसी भी ध्वनि का सही उच्चारण तभी संभव है जब उसे सही लिखा गया हो।

बेशक हिंदी में असंख्य उर्दू अल्फ़ाज़ (अरबी-फ़ारसी शब्द) हैं लेकिन हर व्यक्ति उर्दू न जानने के कारण सही वर्णों पर नुक़्ता लगाने में असमर्थ होता है। जो व्यक्ति नुक़्ता लगाने के पक्षधर हैं वे न केवल नुक़्ता लगाते हैं अपितु हर उर्दू लफ़्ज़ में इस्तेमाल क, ख, ग, ज और फ इन पाँचों वर्णों के नीचे नुक़्ता लगाकर क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ कर देते हैं जबकि हर उर्दू लफ़्ज़ के इन सभी वर्णों पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता। किन वर्णों पर नुक़्ता लगाया जाता है और किन वर्णों पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता ये जानने के लिए हम इन पाँचों वर्णों को दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं - एक वे वर्ण जिन पर नुक़्ता लगता ही है और दूसरे वे वर्ण जिन पर नुक़्ता लगाना अनिवार्य नहीं होता। अनिवार्य नहीं होता से तात्पर्य है कि जो ध्वनियाँ हिंदी से भिन्न नहीं हैं उन पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता। इसके लिए सभी पाँचों वर्णों अथवा ध्वनियों की स्थिति पर अलग-अलग बात करते हैं:-

क - उर्दू (अरबी-फ़ारसी) में क और क़ दोनों ध्वनियाँ होती हैं अतः ज़रूरी नहीं कि हर क वर्ण पर नुक़्ता लगाया ही जाए। किताब और क़लम दोनों उर्दू शब्द हैं। किताब में क पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता लेकिन क़लम में क पर नुक़्ता लगाया जाता है। अब किताब शब्द को पुनः देखिए। किताब अरबी भाषा का शब्द हैं लेकिन इसे भी दो तरह से लिखा जाता है। एक किताब शब्द में क पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता जबकि दूसरे क़िताब शब्द में क़ पर नुक़्ता लगाया जाता है। इसी नुक़्ते और उच्चारण के अंतर के कारण दोनों के अर्थ अलग-अलग हैं। किताब का अर्थ है पुस्तक, ग्रंथ अथवा लिखने की कापी वग़ैरा लेकिन क़िताब का अर्थ है कुर्ते आदि का गला, गिरीबाँ अथवा गिरेबान। ऐसे ही कमर और क़मर दो अरबी शब्द हैं। एक कमर पर नुक़्ता नहीं है लेकिन दूसरे पर नुक़्ता है जिससे दोनों शब्दों के अर्थ अलग-अलग हो जाते हैं। कमर का अर्थ है कटि अथवा लंक जो शरीर का अंग विशेष है जबकि क़मर का अर्थ है चाँद अथवा चंद्रमा।

ख - उर्दू (अरबी-फ़ारसी) में ख पर नुक़्ता लगाकर ख़ बनाया जाता है क्योंकि अरबी-फ़ारसी में बिना नुक़्तेवाला ख होता ही नहीं। यदि किसी शब्द में बिना नुक़्तेवाला ख होगा तो वो निश्चित रूप से अरबी-फ़ारसी का न होकर हिंदी का तत्सम, तöव अथवा देशज शब्द होगा। ऐसे शब्दों की संख्या बहुत है जैसे अख़बार, आख़िर, आख़िरकार, आदमख़ोर, ख़तरा, ख़तरनाक, ख़बर, ख़स्ता, ख़ानाबदोश, ख़ामोश, ख़ुशबू, ख़ुशहाल, ख़ुशक़िस्मत, ख़ूबसूरत, ख़ूबसीरत, ख़्वाब, ख़्वाजा, ख़्वाज़ा, ख़्वाहिश, ख़ौफ़, ख़ौफ़नाक, ख़ौफ़ज़दा आदि।

ग - वर्ण ग की स्थिति भी क जैसी ही है। उर्दू (अरबी-फ़ारसी) में ग और ग़ दोनों ध्वनियाँ होती हैं अतः ज़रूरी नहीं कि हर ग वर्ण पर नुक़्ता लगाया ही जाए। ग़लत और गुल (फूल) दोनों उर्दू शब्द हैं। गुल में

ग पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता लेकिन ग़लत में ग पर नुक़्ता लगता है। ग़ुल और ग़ुल की बात करें तो दोनों ही फ़ारसी भाषा के शब्द हैं। एक ग़ुल में ग पर नुक़्ता नहीं है जबकि दूसरे ग़ुल में ग़ पर नुक़्ता लगा है जिससे दोनों के अर्थ बदल जाते हैं। बिना नुक़्तेवाले गुल शब्द के स्वयं कई अर्थ हैं जैसे फूल, पुष्प, सुमन; गुलाब का फूल; चिराग़ का गुल; आँख की फूली आदि। ग़ पर नुक़्ता लगे ग़ुल का अर्थ है कोलाहल, शोर, चीख़ अथवा पुकार। ग़ुल का अर्थ शोर है लेकिन ज़ोर देने के लिए कई बार हम शोर और ग़ुल दोनों शब्दों को इकट्ठा करके शोरगुल अथवा शोरोगुल भी लिखते हैं। नुक़्ता लगाने के हिसाब से दोनों प्रकार के शब्दों की विस्तृत सूची है।

ज - वर्ण ज की स्थिति भी क और ग जैसी ही है। उर्दू (अरबी-फ़ारसी) में ज और ज़ दोनों ध्वनियाँ होती हैं अतः ज़रूरी नहीं कि हर ज वर्ण पर नुक़्ता लगाया ही जाए। ज़रा और जहाँ (जहान अर्थात् संसार) दोनों उर्दू शब्द हैं। ज़रा में ज़ पर नुक़्ता लगाया जाता लेकिन जहाँ में ज पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता। जलील शब्द दो तरह से लिखा जाता है जिसमें से एक में ज़ पर नुक़्ता होता है और दूसरे में ज पर नुक़्ता नहीं होता इसलिए दोनों शब्दों के अर्थ अलग-अलग होते हैं। जलील का अर्थ है प्रतिष्ठित, महान, पूज्य अथवा अज़ीम जबकि ज़लील शब्द का अर्थ है भ्रष्ट, नीच, अधम, कमीना अथवा अपमानित। ख़्वाजा और ख़्वाज़ा भी ऐसे ही शब्द हैं। ख़्वाजा का अर्थ है ऊँचे दर्जे का मुसलमान फ़क़ीर; स्वामी, पति, मालिक; सरदार; कोई प्रसिद्ध पुरुष; बड़ा व्यापारी; रनिवास का हिजड़ा सेवक अथवा खोजा जबकि ख़्वाज़ा का अर्थ है इच्छा, कामना, चाहत अथवा ख़्वाहिश।

पिछले दिनों हिंदी की अशुद्धियों और उनके संशोधन पर भाषा संशय-शोधन नामक एक पुस्तक देखने को मिली। पुस्तक में "काम की चीज़ है नुक़्ता" शीर्षक से उर्दू नुक़्ते पर भी एक आलेख है। पुस्तक के इस भाग में सबसे बड़ी कमी यही है कि उर्दू के कुछ अल्फ़ाज़ में उन वर्णों पर भी नुक़्ता लगाया गया है जिन पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता। ऐसे कुछ शब्द हैं हिज़ाब, ज़ज़्बात आदि। हिजाब में ज पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता जबकि जज़्बात में पहले ज पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता। साथ ही कुछ ऐसे अल्फ़ाज़ भी दिए गए हैं जिन पर नुक़्ता लगाया जाना चाहिए लेकिन नुक़्ता नदारद है। कई ऐसे अल्फ़ाज़ भी है जिनमें एक लफ़्ज़ में एक वर्ण पर तो सही नुक़्ता लगा दिया गया है लेकिन दूसरे वर्ण पर नहीं। ऐसे ही नुक़्ते के आधार पर दो अल्फ़ाज़ के मानी में अंतर बतलाया गया है। एक लफ़्ज़ है बारीक और दूसरा है बारीक़। बारीक़ का अर्थ बतलाया गया है महीन अथवा सूक्ष्म। वास्तव में बारीक़ शब्द होता ही नहीं और महीन अथवा सूक्ष्म के लिए उर्दू शब्द बारीक है बारीक़ नहीं।

इसी पुस्तक में एक आलेख का शीर्षक है "लाज़बाव, लासानी लापता, लाचार, बेफ़ायदा, बेबाक आदि शब्द"। इस शीर्षक में लाज़वाब में ज पर जो नुक़्ता लगा है उसे लगाने की आवश्यकता ही नहीं क्योंकि सही शब्द जवाब और लाजवाब ही हैं। हाँ, लाज़वाल में ज पर नुक़्ता लगेगा लेकिन नहीं लगाया गया है। पुस्तक के अंत में शुद्ध-अशुद्ध शब्दों की सूची दी गई है। इस सूची में भी नुक़्ता न लगने वाले वर्णों पर नुक़्ता लगाया गया है। इसमें बिलावज़्ाह को शुद्ध वर्तनी बतलाया गया है जबकि ज पर बिलावजह नुक़्ता लगाया गया है। मजबूरी (विवशता) में भी ज पर

नुक़्ता लगाया गया है जबकि मजबूर, मजबूरी अथवा मजबूरन में ज पर नुक़्ता नहीं लगाया जाना चाहिए। मजबूर का अर्थ है लाचार अथवा विवश लेकिन यदि ज पर नुक़्ता लगाकर मज़बूर लिखा जाता है तो उसका अर्थ होगा कथित अथवा उल्लिखित। तरकीब में भी क पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता। इसी प्रकार से ईजाद (आविष्कार) में भी ज पर नुक़्ता नहीं लगता। यदि ईजाद में ज पर नुक़्ता लगाएँगे तो ईज़ाद का अर्थ होगा ज़्यादती अथवा अधिकता। यदि नुक़्ते की जानकारी देने वाले को ही सही जगहों पर नुक़्ते लगाने की जानकारी नहीं होगी तो अर्थ का अनर्थ होने की पूरी संभावना बनी रहती है। ऐसे में नुक़्ते की सही जानकारी कैसे दी जा सकती है?

उर्दू में प्रयुक्त अरबी-फ़ारसी लिपि में ज़ाल, ज़े, ज़्वाद व ज़ोए चार ऐसे वर्ण व ध्वनियाँ हैं जो ज़ से मिलती-जुलती हैं और एक पाँचवीं बिलकुल अलग व विशिष्ट है लेकिन हिंदी में इन पाँचों के लिए एक ही ज़ प्रयुक्त किया जाता है। उर्दू लिपि में जीम ऐसा वर्ण है जिसकी ध्वनि हिंदी ज जैसी है अतः उस पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता। ऐसा ही एक शब्द है जावेद। जावेद को यदि ज़ावेद लिखेंगे तो वो पूर्णतः अशुद्ध वर्तनी होगी। हिजाब शब्द में भी ज पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता। हिज्र एक ऐसा शब्द है जो उर्दू शायरी में बहुत अधिक इस्तेमाल होता है। हिज्र में भी ज पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता। जनाब, जादू, जागीर और जमाल की तरह ही जनाब शब्द में भी ज पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता। साथ ही उर्दू में अनेक ऐसे शब्द भी हैं जिनमें दो बार ज आता है लेकिन एक ज़ पर नुक़्ता लगाया जाता है और दूसरे ज पर नहीं जैसे: जज़्बा, जज़्बात, जज़्बी, जुज़, जज़ा, जज़ीरा, मजाज़, मिज़ाज, हिजाज़ आदि। वैसे ऐसे शब्द भी हैं जिनमें ज दो स्थानों पर आने के बाद दोनों ज पर ही नुक़्ता लगाया जाता है।

फ - उर्दू (अरबी-फ़ारसी) शब्दों में फ पर नुक़्ता लगाकर फ़ बनाना अनिवार्य है क्योंकि उर्दू में बिना नुक़्तेवाला फ होता ही नहीं। अफ़साना हो या फ़लक दोनों शब्दों में फ़ पर नुक़्ता लगेगा। यदि किसी शब्द में बिना नुक़्तेवाला फ होगा तो वो निश्चित रूप से अरबी-फ़ारसी का न होकर हिंदी का तत्सम, तद्भव अथवा देशज शब्द होगा। फ़ वाले कुछ शब्द हैं फ़ैज़, फ़िराक़, फ़न, फ़नकार, फ़क़ीर, फ़ौरन, शरीफ़, शराफ़त आदि। फ़लक में फ़ पर नुक़्ता लगा है लेकिन यदि फ़लक़ में क़ पर भी नुक़्ता लग जाए तो अर्थ बदल जाएगा। फ़लक और फ़लक़ दोनों ही अरबी शब्द हैं लेकिन फ़लक का अर्थ है आसमान, आकाश, अंबर, व्योम अथवा गगन जबकि फ़लक़ का अर्थ है सवेरे का उजाला अथवा उषा।

आइए उपर्युक्त पाँचों वर्णों का विश्लेषण करके देखते हैं। विश्लेषण करने से पता चलता है कि क, ग और ज ऐसे वर्ण हैं जिनसे बने उर्दू शब्दों में से कुछ वर्णों पर नुक़्ता लगता है और कुछ पर नहीं लेकिन लेकिन ख़ और फ़ पर नुक़्ता अवश्य लगाया जाता है। अब क, ग और ज वर्णों पर विचार कीजिए। क, ग और ज हिंदी की अल्पप्राण ध्वनियाँ हैं। क, ग, च, ज, ट, ड, त, द, प और ब ये दस हिंदी की अल्पप्राण ध्वनियाँ हैं जो पहले पाँच वर्गों में सम्मिलित हैं। टवर्ग और अरबी में प को छोड़कर शेष सभी ध्वनियाँ अरबी और फ़ारसी में भी हैं। यदि ख और फ की बात करें तो ये हिंदी की महाप्राण ध्वनियाँ हैं। ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, और भ ये दस हिंदी की महाप्राण ध्वनियाँ हैं जो पहले

पाँच वर्गों में सम्मिलित हैं। अरबी और फ़ारसी में इनमें से कोई ध्वनि नहीं है। ख़ और फ़ अरबी और फ़ारसी की अपनी विशेष ध्वनियाँ हैं अतः उर्दू में प्रयुक्त ख़ और फ़ वर्णों वाले शब्दों के हर ख़ और फ़ पर नुक़्ता लगाना अनिवार्य है। जैसा कि ऊपर बतलाया गया है किसी उर्दू शब्द में ज और ज़ दोनों ध्वनियाँ अथवा वर्ण आ सकते हैं लेकिन उर्दू में अरबी अथवा फ़ारसी भाषा का कोई ऐसा शब्द नहीं मिलेगा जिसमें ख़ और ख अथवा फ़ और फ दोनों ध्वनियाँ अथवा वर्ण हों।

कुछ व्यक्ति समझते हैं कि हिंदी और उर्दू (अरबी-फ़ारसी) के शब्दों में अंतर करने और उनके अर्थों में अंतर को समझने के लिए ही अरबी-फ़ारसी के शब्दों के कुछ वर्णों पर नुक़्ता लगाया जाता है। ये बात ठीक है लेकिन हिंदी ही नहीं उर्दू (अरबी-फ़ारसी) के शब्दों में अंतर करने और उनके अर्थों में अंतर को समझने के लिए भी अरबी-फ़ारसी के शब्दों के कुछ वर्णों पर नुक़्ता लगाना अनिवार्य है। एक उदाहरण देखिए। राज हिंदी का शब्द है तो राज़ उर्दू (अरबी-फ़ारसी) का। नुक़्ते के अंतर के कारण ही हम इनकी सही पहचान करके इन दोनों के सही अर्थ जान सकते हैं अन्यथा नहीं। हिंदी शब्द राज का अर्थ है राज्य अथवा शासन जबकि उर्दू शब्द राज़ का अर्थ है रहस्य, भेद, मर्म अथवा तत्त्व। एक और शब्द-युग्म लीजिए। एक है लहजा और दूसरा है लहज़ा। एक में ज पर नुक़्ता नहीं लगा है लेकिन दूसरे शब्द में ज़ पर नुक़्ता लगा है। ये दोनों ही शब्द अरबी भाषा के हैं। लहजा शब्द का अर्थ है स्वर, आवाज़, बात करने या पढ़ने का ढंग अथवा टोन जबकि लहज़ा शब्द का अर्थ है क्षण, पल अथवा लम्हा। उर्दू शायरा शबीना अदीब का ये शेर देखिए:

जो ख़ानदानी रईस हैं वो मिज़ाज रखते हैं नर्म अपना,

तुम्हारा लहजा बता रहा है तुम्हारी दौलत नई-नई है।

यहाँ लहजा शब्द में नुक़्ता नहीं लगा है। यदि यहाँ लहजा में ग़लती से भी ज पर नुक़्ता लग जाए तो शेर को समझा ही मुहाल हो जाए। तभी कहा जाता है कि अपना लबो-लहजा ठीक रखिए। यह भी कहा जाता है कि अपने शीन-क़ाफ़ दुरुस्त रखिए अर्थात् सही उच्चारण कीजिए और जहाँ ज़रूरत हो नुक़्ता लगाइए। ये उर्दूवालों के लिए ही नहीं हिंदीवालों के लिए भी अच्छा होगा।

यदि हम देवनागरी लिपि में कुछ वर्णों पर नुक़्ता नहीं लगाएँगे तो इनको ठीक से पहचानकर इनके सही अर्थ जानना असंभव होगा। इस आलेख में नुक़्ता लगाने के औचित्य पर चर्चा की जा रही है। आइए थोड़ा नुक़्ता शब्द की वर्तनी पर भी बात कर लें। इस आलेख में हमने नुक़्ता शब्द में क् पर नुक़्ता लगाया है। एक नुक्ता शब्द ऐसा भी होता है जिसमें क् पर नुक़्ता नहीं लगाया जाता। यदि इस आलेख में हम नुक़्ता शब्द के स्थान पर नुक्ता कर देते तो अर्थ का अनर्थ हो जाता। हम अपनी बात को किसी भी सूरत में नहीं समझ पाते क्योंकि नुक्ता शब्द का अर्थ है तह की बात, सूक्ष्मता, बारीकी, रहस्य, मर्म अथवा भेद जबकि आलेख में प्रयुक्त नुक़्ता शब्द का अर्थ है अधोबिंदु, बिंदी, बिंदु, चिह्न अथवा निशान जो व्याकरण अथवा भाषाविज्ञान से संबंधित है। वैसे भी नुक़्ता शब्द जातिवाचक है जबकि नुक्ता भाववाचक शब्द है। कहने का तात्पर्य यही है कि किसी शब्द के किन्हीं वर्णों पर नुक़्ता

लगाना कई प्रकार के परिवर्तन कर देता है अतः सही अर्थबोध के लिए नुक़्ते की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

आजकल हिंदी और उर्दू पहले के मुक़ाबले में पास आती जा रही हैं। आजकल के उर्दू मुशायरों में उर्दू शायरों के साथ-साथ हिंदी के कवि भी सम्मिलित हो रहे हैं। इसी प्रकार से हिंदी कवि-सम्मेलनों में उर्दू के शायर भी आमंत्रित किए जा रहे हैं। ऐसे में दोनों भाषाओं के जानने वालों के लिए दोनों भाषाओं का महत्त्व बढ़ जाता है। यदि कोई रचना पसंद आती है तो श्रोता अनुरोध करते हैं कि इसे फिर से पढ़िए। इसके लिए उर्दूवाले मुकर्रर शब्द का इस्तेमाल करते हैं क्योंकि मुकर्रर का अर्थ है पुनः, फिर अथवा दोबारा। यदि कोई श्रोता मुकर्रर में क पर नुक़्ता लगाकर मुक़र्रर बोल दे तो बड़ी विचित्र स्थिति हो जाएगी क्योंकि मुक़र्रर का अर्थ है नियत, तयशुदा अथवा निश्चित। अतः जो लोग सोचते हैं कि उर्दू में हर क, ख, ग, ज अथवा फ पर नुक़्ता लगा देने से वो शुद्ध हो जाता है उनका ऐसा सोचना उचित नहीं। हिंदी और उर्दू के ही नहीं अरबी अथवा फ़ारसी भाषा के शब्दों के कुछ वर्णों पर नुक़्ता लगाना पूर्णतः अशुद्ध व हास्यास्पद होगा। अतः इस स्थिति को जानना-समझना अनिवार्य है क्योंकि उर्दू अल्फ़ाज़ पर नुक़्ता लगाना ज़रूरी तो है लेकिन हर लफ़्ज़ पर नहीं। देवनागरी लिपि में उर्दू शब्दों के अपेक्षित वर्णों पर नुक़्ता लगाना और अनपेक्षित वर्णों पर नुक़्ता न लगाना दोनों बातें ही महत्त्वपूर्ण हैं।

•